13

पृथ्वी पर रहते, पर स्वर्ग की ओर ध्यान लगाए हुए

(फिलिप्पियों 3:17-4:1)

इस वक्त आप कहां हैं-किसी इमारत के अन्दर या बाहर? आप जहां भी हैं, एक पल के लिए आस पास देखें। आपने क्या देखा? अब, अपने हाथ से किसी चीज़ को छुएं। शायद आपने किसी फर्नीचर को छुआ है। यदि आप बाहर हैं तो शायद आपने घास या भूमि को छुआ है। यह वह संसार है जिसे हम अपनी पांच इंद्रियों से अनुभव करते हैं। यह वही संसार है, जिससे हम परिचित हैं। यही वह संसार है जो इसके अधिकतर रहने वालों का ध्यान खींचता है। परन्तु मसीही व्यक्ति जानता है कि यह संसार केवल अस्थाई है यानी प्रभु के वापस आने पर यह जाता रहेगा (2 पतरस 3:4, 9, 10)। उसे मालूम है कि उसका पक्का निवास *स्वर्ग* में है और उसका लगाव वहीं होना चाहिए।

हम पहले ही पौलुस के कथन ''निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिसके लिए *परमेश्वर ने* मुझे मसीह यीशु में *ऊपर बुलाया है*'' (फिलिप्पियों 3:14) पर चर्चा कर चुके हैं। जेम्स टोले ने इसे ''स्वर्ग *से मिली* और स्वर्ग *में जाने की* बुलाहट'' नाम दिया है।[1] इस पाठ में ''पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहने'' (3:19) वालों और जिनका ''स्वदेश स्वर्ग पर है'' यानी जो यीशु के आने की राह देख रहे हैं, (3:20) में अन्तर किया जाएगा।

हमारी सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक, एक ही समय में पृथ्वी पर रहने वाले परन्तु स्वर्ग की ओर ताकने वाले यानी ''संसार में'' (यूहन्ना 17:11) पर ''संसार के नहीं'' (यूहन्ना 17:16) की बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ता है। यहां और अब और वहां और तब में तनाव बना रहता है। हम सब के सामने एक सवाल है कि ''क्या मेरा मन पृथ्वी की वस्तुओं पर लगा है या स्वर्ग की वस्तुओं पर?''

मानने के लिए एक नमूना (3:17)

अध्याय 3 में पौलुस की पिछली शिक्षाओं को फिलिप्पी की कलीसिया के सदस्यों पर व्यक्तिगत रूप से लागू किया जा सकता है। आयत 17 में प्रेरित ने अपना ध्यान पूरी मण्डली पर मोड़ लिया। हिन्दी में इस आयत का आरम्भ ''हे भाइयो, तुम सब मिलकर मेरी सी चाल चलो, ...'' यूनानी भाषा में इस आयत का आरम्भ ''अनुसरण करने वाला'' (mimetes) के लिए पूर्व सवर्ग के साथ ''के साथ'' (*sun*)[2] के लिए उपसर्ग के साथ मिश्रित शब्द *summimetes* के बहुवचन रूप से आरम्भ होता है। ''के साथ'' के अर्थ वाला उपसर्ग संकेत देता है कि यह ऐसा काम था कि मसीही लोगों ने *मिलकर* करना था (देखें KJV)। इसलिए NASB यह ''साथ

हो लो'' है।

पौलुस का उदाहरण

किस बात में साथ हो लो? कुछ ही प्रचारकों के पास पौलुस के आदेश देने का साहस होगा: ''... मेरे नमूने का अनुसरण करने के लिए मेरे साथ हो लो।'' पौलुस ने मूलतया यह कहा कि ''मेरे संगी अनुकरण करने वाले बन जाओ।'' मैं पचास से अधिक वर्षों से प्रचार कर रहा हूं पर मैंने कभी अपने सुनने वालों से अपनी नकल करने का आग्रह नहीं किया।

क्या पौलुस अहंकारी हो रहा था? नहीं, वह बड़ी गम्भीरता से इस बात से अवगत था कि वह वह नहीं था जो उसे होना चाहिए था (3:12, 13)। उसने सम्भवतया यह लिया कि उसके पाठक समझ जाएंगे कि उसके शब्दों में योग्यता की गुंजाइश है। जब उसने कुरन्थियों को ऐसी आज्ञा दी तो उसने अपनी बात को इस प्रकार स्पष्ट किया: ''तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं'' (1 कुरिन्थियों 11:1; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 1:6)। फिलिप्पियों 3:17 में योग्यता संदर्भ से ली जानी है। पौलुस अपने जीवन में दिए जाने वाले बलों की बात कर रहा था। उसके लिए मसीह से बढ़कर कोई बात नहीं थी (3:4-11)। अपने अतीत को पीछे छोड़कर, वह आगे बढ़ रहा था (3:12-14)। उसने अपने पाठकों से ऐसी ही सोच रखने का आग्रह किया (3:15, 16)। आयत 17 उसी शिक्षा का विस्तार है। एक अर्थ में पौलुस कह रहा था, ''मेरे व्यवहार की नकल करो जो यीशु और जीवन के प्रति मेरा है।'' अपनी नज़र स्वर्गीय लक्ष्य पर लगाए रखा।

साथी मसीही लोगों के उदाहरण

किसी बात का सफलतापूर्वक अनुसरण करने लिए हमें उसे देखना आवश्यक होता है। पौलुस को मालूम नहीं था कि वह फिलिप्पियों से दोबारा कब मिलेगा (देखें 1:27) सो उसने अपनी ताड़ना को विस्तार दिया: ''और उन्हें पहचान रखो, जो उसी रीति से चलते हैं, जिसका उदाहरण तुम हम में पाते हैं'' (3:17ख)। पुराने और नये दोनों नियमों में ''चलना'' शब्द आम तौर पर ''जीना'' के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है (देखें भजन संहिता 1:1, 1 यूहन्ना 1:7)। अनुसरण किए जाने के योग्य लोगों में इपफ्रुदीतुस होगा जो फिलिप्पी में वापस आ रहा था (2:25) और तीमुथियुस जिसने वहां शीघ्र पहुंचना था (2:19)। फिलिप्पी का कोई भी परिपक्व मसीही (देखें 3:15) अच्छा नमूना दे सकता था।

3:17 के दो शब्दों पर अतिरिक्त टिप्पणी देनी बनती है। पहला तो यूनानी शब्द (*saopeo* का एक रूप) का अनुवाद ''पहचान रखो'' है। यह आयत 14 वाले ''निशाने'' के लिए इस्तेमाल किए शब्द का क्रिया रूप है। ''निशाना'' उसके सम्बन्ध में है जो *दिखाई* देता है; यह रूपक उस अन्तिम रेखा का है जिस पर धावक अपनी नज़र टिकाए रहता है। पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द में देखने का विचार भी है: इसका अर्थ ''को देखना, ध्यान रखना, विचार करना''[3] है। रोमियों 16:17 में उसने इस शब्द का इस्तेमाल नकारात्मक स्थिति में किया। (उन्हें ताड़ लिया करो,) परन्तु यहां उसने इसका अर्थ सकारात्मक अर्थ में किया। अफ़सोस की बात है कि हम में से कुछ लोग अच्छे नमूनों के बजाय बुरे नमूनों की ओर अधिक झुकाव रखते हैं। प्रेरित के

पाठकों को विश्वासी वफ़ादार लोगों की नकल करने के लिए ''उन्हें पहचान रखने'' के लिए कहा गया है।[4]

दूसरी बार देखने के योग्य एक और शब्द है ''उदाहरण।'' ''उदाहरण'' *tupos* के एक रूप tupon का अनुवाद है जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द ''टाइप'' मिला है। इस शब्द का इस्तेमाल बिल्डिंग के नमूने के लिए किया जाता था (इब्रानियों 8:5)। इसका इस्तेमाल शिक्षा के नमूनों (रोमियों 6:17) और नैतिक नमूनों (देखें 1 कुरिन्थियों 10:6, 11; 1 थिस्सलुनीकियों 1:7) के लिए भी किया जाता था। नये नियम में आज कलीसिया के लिए परमेश्वर का नमूना है। यानी हमें क्या विश्वास करना है, क्या करना है और क्या सिखाना है। हम ''सब कुछ नमूने के अनुसार बनाना'' सीखें (देखें इब्रानियों 8:5)।

फिलिप्पियों 3:17 अच्छे नमूने होने और अच्छे नमूने बनने के महत्व को प्रकाशमान करता है। हम जन्म से नकल करने वाले लोग हैं। एक छोटी लड़की पर विचार करें जो अपनी मां की ड्रेस पहन लेती है या छोटा लड़का जो अपने पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए अपने पांव रखने के लिए अपनी टांगें रखता है। हमारे आधुनिक कई कौशल जैसे खाना बनाना, हल चलाना या कोई चीज़ बनाना नकल या अनुकरण करके ही सीखे गए हैं।[5] हमारे आत्मिक जीवनों के सम्बन्ध में, भाइयों को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए देखना सहायक होता है। भरोसा रखने की आवश्यकता *के बारे में पढ़ना* एक बात है (देखें इब्रानियों 2:13; 1 तीमथियुस 4:10) और अच्छे और बुरे समयों में परमेश्वर में भरोसा रखने वाले मसीही को *देखना* दूसरी बात है।

मैंने पहले कहा था कि कुछ प्रचारक यह कहने की हिम्मत करते हैं कि मेरी नकल करो। इसके साथ ही प्रभु के सब सेवकों को यह समझ लेना चाहिए कि उनकी नकल की *जाएगी,* चाहे वे चाहें या न। हम में से उन लोगों पर जो परमेश्वर के वचन को सिखाते या उसका प्रचार करते हैं यह कितनी भयंकर ज़िम्मेदारी डाल देता है! (देखें याकूब 3:1)। यह बात केवल सेवकों के लिए ही नहीं है, बल्कि सब मसीही लोगों के लिए भी है (देखें मत्ती 5:13-16)। हम में से हर कोई या तो अच्छा नमूना है या बुरा। हमें सब बातों से ऊपर मसीह को जगह देकर नमूना बनने की कोशिश करनी चाहिए, कि हम अपने मनों को स्वर्गीय बातों पर लगाएं। हमारे वचन पाठ का मुख्य विचार यही है।

जिन लोगों से बचना चाहिए (3:18, 19)

हर अच्छे नमूने के लिए कई बुरे नमूने होते हैं। अधिकतर माता-पिता को उनका ध्यान रहता है जिनकी उनके बच्चे नकल करते हैं। इसी प्रकार से अच्छे नमूनों के लिए अपने आपको अपने पाठकों के लिए आदर्श दिखाकर एक अर्थ में पौलुस ने उन्हें बुरे नमूनों का अनुसरण *न* करने की चेतावनी दी:

> क्योंकि बहुतेरे ऐसी चाल चलते हैं, जिसकी चर्चा मैंने तुम से बार-बार की है, और अब भी रो रोकर कहता हूं, कि वे अपनी चाल-चलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। उन का अन्त विनाश है, उन का ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं (3:18, 19)।

विशेष प्रासंगिकता

पौलुस ने शायद अपने पहले किसी दौरे में इन लोगों के बारे में फिलिप्पियों को चेतावनी दी थी, या उसने पिछले किसी पत्र में चेतावनी दी (देखें फिलिप्पियों 3:1)। उसने उन्हें इन लोगों के बारे में पहले ही सावधान किया था इसलिए उन्हें मालूम होगा कि उसके मन में क्या है–परन्तु हमें नहीं। कई लेखक यह ध्यान दिलाते हैं कि यदि हम सम्भावित संदिग्ध लोगों का ध्यान रखते हैं, तो हमें इस अध्याय के पहले भाग से आगे जाने की आवश्यकता नहीं है, जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं: आयत 2 वाले यहूदी मत की शिक्षा देने वाले। ये लोग ''मसीह की क्रूस के शत्रु'' थे; क्योंकि ''यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती [जैसा कि यहूदी मत की शिक्षा करने लोग बताते थे], तो मसीह का मरना व्यर्थ होता'' (गलातियों 2:21)। उनका अन्त ''विनाश'' था क्योंकि ''जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हैं, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए'' हैं (गलातियों 5:4)। ''जिनका ईश्वर उनका पेट है'' वाक्यांश उनके पुराने नियम के खाने पीने के जटिल नियमों को मानने की ज़िद करना हो सकता है। ''जिनकी महिमा उनकी शर्म'' को अपनी कमियों पर शर्मिंदा होने के बजाय व्यवस्था को मानने के उनके घमण्ड पर करने पर लागू किया जा सकता है। (खतने का संकेत ''शर्म'' शब्द में देखा जा सकता है, जिसका इस्तेमाल कई बार नंगेज के पर्यायवाची के रूप में होता था [देखें मीका 1:11; नहूम 3:5]।) यहूदी मत की शिक्षा देने वाले ये लोग रीति-रिवाजों को मानने पर मुख्य ज़ोर देते हुए ''अपने मन पृथ्वी की बातों पर लगाते हैं।''

अन्य लेखकों का मानना है कि फिलिप्पियों 3:18, 19 की शब्दावली उन झूठे शिक्षकों पर अधिक फिट बैठती है जो यह सिखाते थे कि मसीही व्यक्ति जैसे चाहे जी सकता है, यानी परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने की आवश्यकता नहीं है।[6] ऐसे लोग भी ''मसीह के क्रूस के शत्रु ही थे'' क्योंकि क्रूस अपने आप से और पाप से मरने का प्रतीक हैं (देखें मत्ती 16:24)। उनका अन्त ''विनाश'' था, क्योंकि जो लोग ''शरीर के काम'' करते हैं वे ''परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे'' (गलातियों 5:19–21)। उनका ''ईश्वर उनका पेट'' था क्योंकि वे अपने आपको शारीरिक बातों के लिए देते थे। वे उन अपमानजनक बातों में घमण्ड करते थे जो उन्होंने की होती थी, और उनके मन इस पृथ्वी की बातों पर ''लगे थे''।

कई पात्रों के नाम सुझाए गए हैं।[7] वे जो भी थे, उनके बारे में सोचना भी पौलुस को परेशान कर देता था। यूनानी धर्मशास्त्र में उसने उन्हें ''क्रूस के शत्रु'' बताया। उनके बारे में लिखते हुए वह रोया। फिलिप्पियों 3:18 में अनुवादित शब्द ''रो-रोकर'' (यू.: *klaion*) का अर्थ ''दुख को ऊंची अवाज़ में व्यक्त करना'' है।[8] इस तथ्य ने कि इन झूठे शिक्षकों का अस्तित्व था, और वे पौलुस के प्रिय फिलिप्पियों के लिए खतरा थे, उसका दिल तोड़ दिया।

सामान्य प्रासंगिकता

18 और 19 आयतों पर व्यापक रूप में अलग-अलग टिप्पणियों को पढ़ते हुए, दो विचार मन में आते हैं। पहला यह है कि सम्भावित अपराधियों की सूची सरगम को धार्मिक ''विधियों'' (यहूदी मत की शिक्षा देने वाले जिन्होंने मसीही लोगों पर पुराने नियम की व्यवस्था थोपने की कोशिश की) से धार्मिक ''उदारवादी'' (जिन्हें लगता था कि आज्ञा का पालन आवश्यक नहीं है)

तक जाती है। दूसरा विचार यह है कि पौलुस के विवरण को लगभग *किसी भी* भ्रांतिक धार्मिक या नैतिक लहर के लिए लागू किया जा सकता है। दोनों आयतों पर एक और नज़र मानते हैं। इस बार इसकी सामान्य प्रासंगिकता बनाएंगे।

दुख की बात है कि आज लोग ''मसीह के क्रूस के शत्रु'' हो सकते हैं। मसीहियत में क्रूस ही केन्द्र है। हमें ''क्रूस के द्वारा परमेश्वर से'' मिलाया जाता है (इफिसियों 2:16); ''... हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है'' (1 कुरिन्थियों 1:18)। पौलुस ने कुरिन्थियों को बताया, ''मैं ने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, बरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं'' (1 कुरिन्थियों 2:2)। फिर, उसने लिखा, ''पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का'' (गलातियों 6:14)। बेशक जब हम ''मसीह के क्रूस'' की बात करते हैं तो हमारे ध्यान में लकड़ी का वह क्रूस नहीं होता जिस पर वह मरा था, बल्कि वह सब होता है जिस बात का वह क्रूस प्रतीत है यानी उस प्रेम का जो हमारे लिए परमेश्वर के मन में था, यीशु का बलिदान, हमारे प्राणों का अधिकार, अपने अधिकारों की चुनौती, आदि।

कोई क्रूस का शत्रु है यदि वह उसे नहीं मानता जो यीशु के परमेश्वर होने और हमारे उद्धार के नीमित उसके मरने की आवश्यकता की बाइबल की शिक्षा को नहीं मानता। धार्मिक समूह क्रूस के शत्रु बन जाते हैं जब उसकी शिक्षा क्रूस को अनावश्यक बना देती है। इसमें वे लोग भी हैं जो यह मानते हैं कि अपने आप में अच्छा जीवन जीना स्वर्ग में जाने की गारंटी है। अविश्वासी क्रूस के शत्रु हैं क्योंकि अपने अधर्म और अपश्चात्तापी होने के कारण ''वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिए फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं। और प्रकट में उस पर कलंक लगाते हैं'' (इब्रानियों 6:6)। क्रूस के शत्रु होने का *दावा* नहीं करते; उन्हें सम्भवतया पता भी नहीं है कि वे शत्रु हैं। तौभी वे अपनी शिक्षा और/या अपने जीवनों के द्वारा वे उसका विरोध कर रहे हैं जिसका प्रतिनिधित्व क्रूस करता है।

विश्वास न करने वालों और आज्ञा न मानने वालों का ''अन्त'' ''विनाश'' ही है। अनुवादित शब्द ''विनाश'' यूनानी शब्द (*apoleia* का एक रूप) काफिर सताने वालों के अन्त का संकेत देने के लिए आरम्भ में इस्तेमाल किया जाता था (1:28)। यहां इसका इस्तेमाल अधर्मी मसीही लोगों के अन्त के लिए है। ये शब्द दुष्टों के अनन्त दण्ड का संकेत देता है (मत्ती 7:13; 2 पतरस 3:7; प्रकाशितवाक्य 17:8, 11)।[9] CEV ''... वे नरक की ओर जा रहे'' हैं!

पौलुस का अगला वाक्यांश बिल्कुल निशाने पर: ''उनका ईश्वर पेट है।'' किसी चीज़ के किसी का ''ईश्वर'' होने का अर्थ है कि वह चीज़ (जो भी हो) सबसे अधिक महत्व की है यानी वह उसके जीवन को नियन्त्रित करती है। मूल यूनानी धर्मशास्त्र में इस शब्द का अर्थ ''पेट'' ही है (देखें KJV) पौलुस की डांट में खाने की लत (पेटू; देखें व्यवस्थाविवरण 21:20; नीतिवचन 23:21; 28:7; तीतुस 1:12) या कोई भी लत (शराब, या नशे या किसी और चीज़ की) शामिल होगी। उसके शब्दों को सामान्य अर्थ में शारीरिक लालसा जिसमें अवैध शारीरिक सम्बन्ध भी है, के लिए भी लागू किया जा सकता है।[10] NCV में है ''वे जो भी उनका शरीर चाहे करते हैं।'' प्रेरित द्वारा लगाए गए इस आरोप को और भी विस्तार दिया जा सकता है। रोमियों 16:17, 18 में झूठे शिक्षकों का वर्णन करने के लिए जिन्होंने कलीसिया में फूट डाली थी ऐसी ही शब्दावली का

इस्तेमाल किया गया। उस हवाले में यह पद्य किसी की व्यक्तिगत इच्छाओं के सबसे महत्वपूर्ण होने की बात है। हम सब के लिए स्वार्थ हर जगह होने वाला प्रलोभन है!

पौलुस का अगला विवरण आज के लिए असामान्य रूप में उपयुक्त लगता है: ''वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते है। CEV में इसे ''अपनी अपमानजक बातों की शेखी मारते'' कहता है। मेरे मन में एक से एक उदाहरण आते हैं।[11]

- लोग अपने शारीरिक लुचपन की शेखी मारते हैं।
- जवान लोग शेखी मानते हैं कि बीती रात उन्होंने कितना नशा चढ़ लिया था।
- वयस्क लोग शेखी मारते हैं कि कारोबार के सिलसिले में वे अपने सहयोगियों से ''कितने अच्छे'' (यानी चालाक) हैं।
- बुराई के सम्बन्ध में अपनी ''सहनशीलता'' पर शेखी मारने वाले (देखें 1 कुरिन्थियों 5:2) पुस्तकों, नाटक, टेलीविज़न के कार्यक्रमों में बेशर्मी से हुल्लड़पन या गंदी भाषा का इस्तेमाल करते या नंगेज़ और व्यभिचार जैसे शर्मनाक कृत्यों को दिखाते हैं। ...

मुझे यिर्मयाह 6:15 का स्मरण आता है: ''वे कुछ भी लज्जित नहीं हुए; वे लज्जित होना जानते ही नहीं।'' यशायाह 5:20 भी उपयुक्त लगता है: ''हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते, और कड़वे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं!'' थॉमस मैंटन ने लिखा है, ''मनुष्य गिर गया है ... मनुष्य औंधा हो गया है; उसका प्रेम वहां है, जहां उसकी घृणा होनी चाहिए, और उसकी घृणा वहां है जहां उसका प्रेम होना चाहिए; उसका घमण्ड वहां है जहां उसकी शर्म होनी चाहिए और उसकी शर्म वहां है, जहां उसका घमण्ड होना चाहिए।''[12]

अपने वचन पाठ में आगे बढ़ते हुए हम आयत 19 के अन्त में समस्या के मुख्य भाग में आते हैं: जिन लोगों ने पौलुस निन्दा की उन लोग ''पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते थे।'' LB में इसका अनुवाद इस प्रकार है: ''वे केवल इस पृथ्वी[13] पर के जीवन का सोचते हैं।'' चार्ल्स अर्डमैन ने लिखा है, ''उनका दायरा समय और समझ की बातों में सीमित है।''[13] उनकी सोच को इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है: नरक के लिए तय और अपनी इच्छाओं से *चलाए जाते,* वे इस संसार को *समर्पित* रहते हैं।[14]

जैसा कि पहले कहा गया है, हम नहीं जानते कि पृथ्वी पर मन लगाने वाले ये लोग कौन थे, पौलुस को लगा कि ये लोग फिलिप्पी के मसीही लोगों को प्रभावित कर सकते हैं। प्रेरित को इस बात की कोई चिंता न होती यदि वे आम लोग होते। वे सम्भवतया आकर्षक व्यक्तित्व वाले और प्रभावशाली लोग थे। आज गुणगान करने वाले प्रवक्ताओं की सेना सांसारिक बातों के महत्व को दिखाती है। इस ''सेना'' में हमारे समय के कुछ बहुत प्रभावशाली और आकर्षक लोग जैसे जैसे नायक और नायिकाएं, बड़े लेखक, विश्व प्रसिद्ध एथलीट, प्रसिद्ध संगीतकार और गायक, प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ ... और कई ऐसे लोग। इसमें मित्र, पड़ोसी या आपके परिवार के लोग भी हो सकते हैं। वे जो भी हों उनके संदेश की एक बात मिलती है कि ''*यह* संसार ही सब कुछ है।'' हम सब के सामने जो खतरा है वह यह है कि हम अपने विचारों पर संसार की बातों को हावी होने देते हैं। ''संसार में'' पर ''संसार के'' न होना कितना कठिन है!

हमें उनका अनुसरण *नहीं* करना चाहिए। जिनका लगाव पृथ्वी की बातों पर है। इसके विपरीत हमें उनकी नकल करनी *चाहिए,* जिनकी नज़र स्वर्गीय बातों पर टिकी है–अब्राहम जैसे लोग, जो उसे भी देख सकता था जो दिखाई नहीं देता: ''विश्वास ही से अब्राहम ... ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में जैसे पराए देश में परदेशी रहकर इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास किया। क्योंकि वह उस स्थिर रहने वाले नगर की बाट जोहता था, जिसका रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है'' (इब्रानियों 11:8–10)।

प्राप्त करने के लिए उद्देश्य (3:20-4:1)

अपने पाठकों के लिए पौलुस की इच्छा को रोम में मसीही लोगों को कही उसकी बातों से संक्षिप्त किया जा सकती है: ''और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए'' (रोमियों 12:2क)। उसने ऐसे ही विचार कुलुस्सियों को दिए: ''पृथ्वी पर की नहीं, परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ'' (कुलुस्सियों 3:2)। फिलिप्स में कुलुस्सियों 3:2 का अनुवाद इस प्रकार है: ''अपना मन स्वर्गीय बातों पर लगाएं, न कि संसार की बीत जाने वाली बातों पर।''

एक स्वर्गीय स्थान

एक स्वर्गीय बात जिस पर उन्हें अपने मन लगाने की आवश्यकता थी वह स्वर्गीय स्थान था। फिलिप्पियों को बुरे नमूनों के बारे में चेतावनी देने के बाद पौलुस ने 3:17 में आरम्भ किए विचार को आगे बढ़ाया।[15] उसने लिखा, ''पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है'' (3:20क)।[16] यूनानी शब्द (politeuma का एक रूप) का अनुवादित शब्द ''स्वदेश'' 1:27 में दी गई क्रिया का संज्ञा रूप है। 1:27 वाले ''तुम्हारा चाल चलन'' क्रिया का संज्ञा रूप है। जैसा कि पिछले एक पाठ में बताया गया था, मोफेट के अनुवाद में 3:20 को ''हम स्वर्ग की एक बस्ती हैं'' कहा गया है। इस रूपक का फिलिप्पियों के लिए विशेष अर्थ होगा क्योंकि फिलिप्पी रोम की एक बस्ती थी। रोमी बस्ती को विशेष अधिकार प्राप्त थे, परन्तु उसके साथ कुछ दायित्व भी थे। रोमी बस्ती के वासी रोम के अधीन होते थे। उनका व्यवहार इसके कानूनों से संचालित होता था और उनकी आशा इसके शान में होती थी। इसके अलावा उन से रोमी विचार और संस्कृति को फैलाने की अपेक्षा की जाती थी।

मसीही लोगों के रूप में हमें यह समझने की आवश्यकता है कि इस संसार के सम्बन्ध में हम ''विदेश में रहने वाले'' (एक देश के किसी अलग देश में रहने वाले लोग), यानी हम ''पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी'' हैं (इब्रानियों 11:13; देखें 1 पतरस 2:11)। हमारे नाम स्वर्ग में ''जीवन की पुस्तक में'' नागरिकों के रूप में दर्ज किए गए हैं (देखें फिलिप्पियों 4:3; इब्रानियों 12:23)। यह संसार हमारे लिए केवल ''अस्थाई पता'' है। पर स्वर्ग हमारा ''पक्का पता'' है। रोमी बस्ती के लोगों की तरह हमें विशेष अधिकार प्राप्त हैं पर साथ ही हमारी भी कुछ जिम्मेदारियां भी हैं। हम अपने स्वर्गीय पिता के अधीन हैं। हमें उसके नियमों द्वारा चलाया जाता है और हमारी आशा उसकी महिमा में है और हम से मसीही सच्चाइयों को फैलाने की उम्मीद की जाती है।

एक स्वर्गीय व्यक्ति

पौलुस यह भी चाहता था कि फिलिप्पी लोग अपने मन एक स्वर्गीय व्यक्ति पर लगाएं। उसने आगे कहा, ''और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां [स्वर्ग] से आने की बाट जोह रहे हैं'' (3:20ख)। पौलुस ने पहले ही संकेत दिया था कि वह अन्तिम दिन की राह देख रहा है ताकि वह अन्त में वह मसीह को पूरी तरह से जान सके (3:10, 11)। अलेस मोटायर ने लिखा:

> हम कई बातों की राह देख सकते हैं; अन्त में पाप और प्रलोभन की उपस्थिति से छुटकारे तक; प्राचीन काल के बड़े लोगों यानी अब्राहम, यशायाह और स्वयं पौलुस से मिलने की; उन प्रियजनों से पुन: मिलने की जिन्हें हम जानते हैं; स्वर्गी स्थानों की महिमा की। हां वास्तव में इन सभी बातों की, पर इन सब से ऊपर उस एक बात की जो स्वर्ग को सुसंगत बनाता और अर्थ देता और उसकी और ध्यान दिलाता है, वह एक व्यक्ति केवल जिसके द्वारा इतनी बड़ी संगति इकट्ठी होती है और केवल उसकी महिमा है, ... *उद्धारकर्त्ता, प्रभु यीशु मसीह।* ''और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे,'' एक और जगह पौलुस ने लिखा।[17]

अपनी मृत्यु से पूर्व अपने चेलों के साथ अन्तिम घड़ियों के दौरान मसीह ने वापस आने का वायदा किया (यूहन्ना 14:1-4)। उसके स्वर्ग पर उठाए जाने के समय, स्वर्गदूतों ने उसे ताक रहे लोगों को बताया, ''यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा'' (प्रेरितों 1:11)। आरम्भिक मसीही इस अहसास के साथ कि प्रभु किसी भी समय वापस आ सकता है, उम्मीद की स्थिति में है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-5:2; तीतुस 2:13; इब्रानियों 9:28)। द्वितीय आगमन से उनके जीवन को अर्थ मिल गया। मसीह की वापसी ने उन्हें सताव के दौरान प्रतिदिन की समस्याओं का सामना करने और स्थिर रहने में सहायता की।

पौलुस ने यह लिखते समय कि वे उद्धारकर्त्ता की *बाट* जो रहे थे, अतिकथनी नहीं की। यूनानी धर्मशास्त्र में बाट जो रहे *apekdechomai* यह ''पाना'' (*dechomai*) वाले अर्थ वाले शब्द के साथ दो उपसर्गों (*apo* और *ek*) को मिलाते हुए एक जटिल शब्द है। ''[नये नियम] में से आठ बार में से पौलुस द्वारा छह बार इसका इस्तेमाल किया गया है। ...'' यह उसका विशेष शब्द है, वह शब्द जो उसके लिए उसकी धन्य आशा की मसीही व्यक्ति की तड़प और मसीह के द्वितीय आगमन की उसकी दिली इच्छा को दिखाता है।[18]

फिलिप्पियों 3:20 में ''उद्धारकर्त्ता'' शब्द महत्वपूर्ण है। पौलुस आम तौर पर इस शब्द का इस्तेमाल नहीं करता था पर यहां उसने किया। सम्भवतया शायद इसलिए कि यह प्रभु के वापस आने पर उसके अपने लोगों के सम्बन्ध में अपनी भूमिका को दर्शाता है। दुष्टों के लिए वह केवल न्याय करने वाले के रूप में प्रकट होगा, परन्तु अपने लोगों के लिए वह उद्धारकर्ता यानी इस पाप भरे संसार में से छुड़ाने, उन्हें निर्दोष ठहराने और अनन्तकाल के लिए अपने साथ रहने के लिए लेने आएगा।

आरम्भिक मसीही लोगों के लिए हमें भी अपने मन यीशु और उसके आगमन की ''बाट

जोहने'' पर लगाने की आवश्यकता है। उनकी तरह ही हमें यह अहसास होना चाहिए कि वह किसी भी पल आ सकता है। उनकी तरह ही हमें प्रार्थना करनी चाहिए, ''आमीन। हे प्रभु यीशु आ'' (प्रकाशितवाक्य 22:20)!

एक स्वर्गीय उद्देश्य

प्रभु जब वापस आएगा तो अनोखी बातें होंगी। हम सब मसीह के न्याय सिंहासन के सामने इकट्ठा होंगे (मत्ती 25:31, 32)। उसके दाईं ओर के लोग स्वर्ग में चले जाएंगे जबकि बाईं ओर वाले लोग नरक में जाएंगे (मत्ती 25:34, 41, 46)। परन्तु पौलुस की ''यानी बूढ़े पौलुस के लिए जिसका शरीर दिन ब दिन कमज़ोर होता जा रहा था, सबसे रोमांचकारी घटनाओं में से एक देह का छुटकारा होना था। उसने कहा, ''... प्रभु यीशु मसीह ... अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा यह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा'' (फिलिप्पियों 3:20ख, 21क)।

''हमारी दीन हीन देह''[19] उन शारीरिक देहों को कहा गया है जिनमें अब हम रहते हैं, यानी वे देहें जो बूढ़ी होती, बीमार होती, बिगड़ जाती, मर जाती और गल जाती हैं। एवन मिलोन ने इन देहों को बड़े स्पष्ट रूप में वर्णन किया है: ''सीमाओं में बंधी, कमजोरियों में जकड़ी, पीड़ा में पड़ी और मृत्यु के लिए ठहराई गई।''[20] ''अपनी महिमा की देह'' यहां स्वर्ग में यीशु की आत्मिक देह को कहा गया है। यीशु की ''महिमामय देह'' (KJV) विश्वासी लोगों की आत्मिक देहों का नमूना है जिन्हें मुर्दों में जो जी उठने पर मिलेंगी।

''बदलकर'' और ''अनुकूल'' शब्दों में बदलाव के पूरा होने पर ज़ोर है। ''बदलकर'' के लिए यूनानी शब्द (*metaschematisei*) उपसर्ग *meta* (''के बीच'') के साथ *schema* के शब्द के रूप का पूर्वसर्ग है। ''अनुकूल'' (*summorphon*) का शब्द उपसर्ग *sun* (''के साथ'') के साथ *morphe* शब्द के रूप का उपसर्ग है। आपको याद होगा कि *schema* का अर्थ व्यक्ति या वस्तु के बाहरी रूप के लिए है जो बदल सकता है और बदलता है, जबकि *morphe* उस आवश्यक स्वभाव को कहा गया है। जो बदलता नहीं। प्रभु के वापस आने पर हमारी देहों के बाहरी रूप और उनका आवश्यक स्वभाव बदल जाएगा। ''इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है'' (1 यूहन्ना 3:2)!

क्या मुझे इसकी समझ है या यह कैसे होगा? नहीं पर मैं इसे विश्वास से मानता हूं। अर्डमैन ने लिखा है, ''हमारी जिज्ञासा को तृप्त करने के लिए यह शब्द काफ़ी नहीं हैं, पर यह हमें तसल्ली देने और उम्मीद जगाने के लिए काफ़ी हो सकते हैं।''[21] फिलिप्पियों 3:20 के पहले भाग पर सबसे बढ़िया व्याख्या शायद वही है जो पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15 में लिखी:

> अब कोई यह कहेगा, कि मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और कैसी देह के साथ आते हैं? हे निर्बुद्धि, जो कुछ तू बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता। और जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होने वाली है, परन्तु निरा दाना है, चाहे गेहूं का, चाहे किसी और अनाज का। परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उस को देह

देता है; और हर एक बीज को उस की विशेष देह। ...

> मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ के साथ जी उठता है। स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है: जब कि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है। ... देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे [मरेंगे], परन्तु सब बदल जाएंगे। और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे। क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेता, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया। हे मृत्यु तेरी जय कहां रही? हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? ... परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है (1 कुरिन्थियों 15:35-57)।

इस विषय की प्रासंगिकता स्पष्ट है कि जब यह शरीर बदलने ही वाला है तो शरीर पर ध्यान क्यों लगाएं? आपका मन स्वर्गीय उद्देश्य पर अर्थात आपके ''दीन देह'' के बदलने पर होना चाहिए (फिलिप्पियों 3:20; RSV)।

एक स्वर्गीय सामर्थ

क्या मसीह इसमें दिखाए गए नाटकीय परिवर्तन को लाने में सक्षम है? पौलुस ने अपने पाठकों को विश्वास दिलाया कि वह है और वह ''वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा ये सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है'' इसे करेगा (3:21क)। यह सामर्थ से भरा वाक्य है। ''शक्ति'' का अनुवाद यूनानी शब्द *energian* के एक रूप से किया गया है जिससे हमें अंग्रेजी शब्द ''energy'' (ऊर्जा) मिला है। ''एनर्जिया'' केवल ''शक्ति नहीं बल्कि 'शक्ति कार्य में,' 'शक्ति कार्यकारी,' 'काम कर रही शक्ति' है।[22] (देखें KJV)। 3:21 में अनुवादित शब्द ''शक्ति'' यूनानी शब्द *dunasthai* के एक रूप से लिया गया है जिससे हमें ''डायनामाइट'' अर्थात शक्तिशाली विस्फोटक शब्द मिला है।

यीशु के पास कितनी ''शक्ति'' है? उसके पास ''सारा अधिकार'' है (मत्ती 28:18)। ''सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया'' है (इफिसियों 1:22; देखें 1 कुरिन्थियों 15:27क)। वह ''सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से सम्भालता है: वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिम के दाहिने जा बैठा'' (इब्रानियों 1:3)। उसकी ''... शक्ति विश्वव्यापी और सम्पूर्ण है।''[23] ''सब वस्तुओं को अपने वश में कर'' सकने की यीशु की योग्यता (फिलिप्पियों 3:21) परमेश्वर की गारन्टी है कि वह सचमुच में हमें मुर्दों में से जिलाना और नाशवान अर्थात शारीरिक देहों को अविश्वासी में बदलने यानी आत्मिक देहों में बदलने के योग्य है! हमारे मनों के लिए ध्यान लगाने वाली एक और बात उसकी स्वर्गीय सामर्थ है।

स्वर्गीय आदेश

स्वर्गीय पर पौलुस का ज़ोर अध्याय 4 की पहली आयत तक जारी रहता है: ''इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयो, जिनमें मेरा जी लगा रहता है, जो मेरे आनन्द और मुकुट हो, हे प्रिय भाइयो, प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहो।'' आयत का आरम्भ अध्याय 3 की पिछली आयतों से इसे जोड़ते हुए ''इसलिए'' शब्द के साथ होता है। 4:1 को हम फिर से अगले पाठ में देखेंगे, इस अध्ययन का समापन में कुछ मुख्य बातों पर ध्यान दिलाते हुए करना चाहता हूं।

''इसी प्रकार'' का अर्थ पौलुस द्वारा बताए गए आत्मिक मार्ग को कहा गया है। यानी यह वह मार्ग है जिस पर व्यक्ति अपनी सोच में मसीह को पहल देता है; अर्थात वह मार्ग जिस पर व्यक्ति अपने अतीत को पीछे छोड़कर लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता है यानी वह मार्ग जिस पर व्यक्ति पृथ्वी पर की नहीं, बल्कि ऊपर की बातों पर ध्यान लगाता है।

''इसी प्रकार'' के सम्बन्ध में पौलुस चाहता था कि उसके पाठक ''स्थिर रहें।'' ''स्थिर रहो'' का अनुवाद *steko* के एक रूप से किया गया है जिसका अर्थ युद्ध के बीच में बिना हिले और बिना डोले खड़े सिपाही की तरह बिना मुंह मोड़े और बिना पीछे हटे खड़े रहना (देखें इफिसियों 6:10-17)। मसीही लोगों पर कई प्रकार के दबाव आते हैं जैसे संसार की खींच और शरीर की लालसा (रोमियों 12:2; 1 यूहन्ना 2:16), झूठी शिक्षा और नई नई बातों का आकर्षण (प्रेरितों 20:30; 2 तीमुथियुस 4:3), और सताव की धमकी (2 तीमुथियुस 3:12)। इस सब के विरुद्ध पौलुस ने समझाया कि ''स्थिर रहो!'' अन्य शब्दों में, ''डटे रहो, चाहे सिर कट जाए!'' हमें ''दृढ़ और अटल'' रहना है (1 कुरिन्थियों 15:58)!

हमें ऐसा करने के योग्य कौन बनाएगा। ''स्थिर रहो'' शब्दों के साथ इस वाक्यांश में ''प्रभु में'' इसका अर्थ ''उसके अधिकार को स्वेच्छा से मानते हुए'' ''स्थिर रहो''[24] हो सकता है। अफ़सोस की कुछ लोग प्रभु के मार्ग में स्थिर रहने के बजाय गलत शिक्षा और ढिठाई वाले विद्रोह में, स्थिर रहते हैं।'' परन्तु इस आयत में, ''प्रभु में'' वाक्यांश का अर्थ सम्भवतया यह है कि हमें ''प्रभु की *सामर्थ में*'' स्थिर रहना है। पौलुस ने जब इफिसियों के नाम हमारी आत्मिक युद्ध की बात लिखी तो उसने ''प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो'' (इफिसियों 6:10)। कहते हैं, ''या तो हम प्रभु में स्थिर हैं'' या ''बिलकुल स्थिर नहीं होंगे।'' प्रभु की सामर्थ में खड़े होने का एक ढंग अपने मनों को ऊपर की बातों पर लगाना है।

सारांश

फिर, अपने आस-पास की चीज़ों को एक पल के लिए देखें। अपने हाथ से, ''यह सब 'नष्ट हो जाने वाला' है'' (देखें कुलुस्सियों 2:22)। पौलुस के शब्दों को दोहराएं: ''क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं'' (2 कुरिन्थियों 4:18ख)। इसीलिए तो यीशु ने कहा है, ''अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो। ... परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो'' (मत्ती 6:19, 20क)। यह विचार कई साल पहले याद की गई एक अनाम कविता के मुखड़े में मिलता है:

केवल एक जीवन,
यह भी जल्द बीत जाएगा;
जो परमेश्वर के लिए किया,
केवल वही रह जाएगा।

तो फिर हमारे मन कहां लगे होने चाहिए? पृथ्वी की बातों पर जो जल्द बीत जाएंगे या स्वर्गीय बातों पर जो सदा तक रहेंगी? पसन्द चुनना आसान है। (जहां मैं रहता हूं वहां हम इसे कहेंगे ''दिमाग की बात नहीं''; इसके लिए सोचने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।) हम पृथ्वी पर रहने वाले हो सकते हैं पर आइए हम स्वर्ग को जाने वाले बनें!

टिप्पणियां

[1]जेम्स एम. टोल्ले, नोट्स ऑन फिलिप्पियंस (सन फरनाडो, कैलिफोर्निया: टोल्ले पब्लिकेशंस, 1972), 59. [2]मिश्रित शब्दों, sun को कई प्रकार से लिखा जा सकता है। यहां यह *sum* है। [3]डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एक्सपेंडेंड वाइन'स एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपा. जॉन आर. कोहलन्बर्गर इलिनोइस (मिनियापोलिस: बेथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 715. KJV में ''चिह्न'' शब्द है। कइयों ने यह सोचते हुए कि ''चिह्न'' शब्द का अर्थ कागज पर चिह्न लगाना (लिखना) के अर्थ में है इसे गलत समझा है। इसके विपरीत इसका इस्तेमाल ''मेरी बातों को चिह्नित कर लो'' वाक्य में किया जाता है। यानी, ''*मेरी* बातों *पर ध्यान दो* और उन्हें *ध्यान में रखो।*'' [4]गेरल्ड एफ़. हाथॉर्न, *वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री,* अंक 43, *फिलिप्पियंस,* संपा. डेविड ए. हब्बर्ड एंड ग्लेन डब्ल्यू. बार्कर (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), 159. [5]इस और पिछले वाक्य को जहां आप रहते हैं उसके अनुसार बदल लें। [6]इन झूठे शिक्षकों की अलग-अलग लेखकों द्वारा अलग अलग पहचान की जाती है। शायद वे यह सिखा रहे थे कि अनुग्रह की शिक्षा ने मसीही लोगों को पाप करने का अधिकार दे दिया (देखें रोमियों 6:1), या यह पूर्व-नॉस्टिक समूह हो सकता है जिसका दावा था कि श्रेष्ठ ''ज्ञान'' (देखें 1 तीमुथियुस 6:20) को आज्ञाओं का पालन करने से छूट है (देखें 1 यूहन्ना 2:3, 4)। इन लोगों को ''स्वतन्त्र'' भी कहा जाता है, जिन्होंने मसीही स्वतन्त्रता को पाप करने का लाइसैंस बना लिया (देखें गलातियों 5:13)। सही सही परिचय की आवश्यकता नहीं। 2 पतरस 2 में ऐसे शिक्षक का सामान्य विवरण दिया गया है। [7]विभिन्न टीकाकारों द्वारा यहूदी शिक्षक और मूर्तिपूजक शिक्षक दोनों का प्रस्ताव दिया गया है। परन्तु अधिकतर यह मानते हैं कि पौलुस के मन में *मसीही* झूठे शिक्षक है। यह तथ्य कि पौलुस इतना परेशान था (''रो रहा'') सुझाव दे सकता है कि यह वह मसीही थे जो अपने भाइयों को गुमराह करते थे। [8]वाइन, 1218. [9]कुछ लोग यह सिखाते हैं कि दुष्टों के ''नष्ट'' होने पर वे मिट जाते (अस्तित्व खत्म हो जाता) हैं, परन्तु *apoleia* शब्द ''प्राण की नहीं, स्वास्थ्य की हानि'' का संकेत देता है (वाइन, 295)। [10]कुछ टीकाकारों का मानना है कि ''पेट'' शरीर के निचले भाग के लिए कोमल प्रयोग है, जिसमें गुप्तांग ही शामिल हैं। परमेश्वर द्वारा स्वीकृत यौन सम्बन्ध केवल वचन के अनुसार विवाह में है (देखें इब्रानियों 13:4); अन्य किसी भी प्रकार के यौन सम्बन्ध की बाइबल द्वारा निन्दा की गई है। (देखें रोमियों 13:9; 1 कुरिन्थियों 6:18) NASB में ''व्यभिचार'' के लिए यूनानी शब्द का अनुवाद आम तौर पर अंग्रेजी शब्द ''immorality'' अनैतिकता के साथ किया गया है।

[11]उदाहरणों का कोई अन्त नहीं है: बर्बादता के कामों के लिए शेखी मारने वाले, यह शेखी मारने वाले कि वह जुए में मितना जीते हैं, इत्यादि। [12]जॉन ए. नाइट, *बीकन बाइबल एक्सपोजिशंस,* अंक 9, फिलिप्पियंस, कोलोशियंस, फिलेमोन (केन्सास सिटी, मिज़ोरी: बीकन हिल प्रैस, 1985), 108 में उद्धृत। [13]चार्ल्स आर. अर्डमैन, *दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द फिलिपियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1983), 128. [14]यह विचार चार्ल्स आर. स्विंडल, *लाफ़ अगेन* (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1992), 166 से लिया गया था। [15]18 और 19 आयतों को पौलुस के विचार में कोष्ठक के रूप में जोड़ा गया विचार माना जा सकता है। (KJV में कोष्ठक देखें।) [16]टीकाकार सुझाव देते हैं कि फिलिप्पियों 3:20, 21 का इस्तेमाल भजन द्वारा किया जाता होगा, परन्तु हम पक्का

नहीं बता सकते कि वास्तव में ऐसा ही था। [17]अलेक मोटायर, दि मैसेज ऑफ फिलिपियंस: जीज़स अवर जॉय, दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़, संपा. जॉन. आर. डब्ल्यू. स्टॉट (डाउनर्स ग्रोव, इनिलोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1984), 196 पवित्र शास्त्र का उसका उद्धरण 1 थिस्सलुनीकियों 4:17 से लिया गया है। [18]हाथॉर्न, 171. [19]मूल धर्मशास्त्र में इसका अर्थ ''हमारी दीनता की देह'' है। ''दीनता'' उसी मूल यूनानी शब्द से लिया गया है जिससे 2:3 वाला ''दीनता'' और 2:8 वाला ''दीन'' शब्द। KJV में ''सस्ता बेकार'' अर्थ वाले लातीनी शब्द से ''तुच्छ'' है। [20]एवन मेलोन, *प्रैस टू द प्राइज़* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सेंचुरी क्रिश्चियन, 1991), 98.

[21]अर्डमैन, 130. [22]हाथॉर्न , 173. [23]रिचर्ड बी. गफिन, नोट्स ऑन फिलिपियंस, *दि NIV स्टडी बाइबल, संपा. केन्नथ बार्कर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1808. [24]वाइन, 1084